बालमन कुछ कहता है

माँ

माँ मेरी माँ, मुझे बहुत अच्छी लगती है मैं माँ के बगैर न तो. खाना खाती हूँ और न ही सोती हूँ। जब मैं दूसरे बच्चों के माँ के बारे कहती हूँ, तो मेरी माँ बड़े प्यार से समझाती कि सभी बच्चों की माँ अच्छी होती है। जब मैं अपनी माँ की कही बातों पर ध्यान देती हूँ तो पाती हूँ कि उन बच्चों की माँ भी उन्हें उसी तरह प्यार करती हैं, जैसे की मेरी माँ मुझे करती है। सुबह मुझे वह स्कूल के लिए तैयार करती है। टिफिन बनाती है। मेरी सभी चीजों की देख-भाल करती है। कभी-कभी मेरे कारण नाराज़ हो जाती है। लेकिन फिर तो मुझे मना लेती है। मैं भगवान से मनाती हूँ सभी बच्चों की माँ उनके साथ रहे और प्यार करे

स्कूल = केंद्रिय विद्यालय नाम = स्नेहा घोष

एन पी ई आर टी ग्रान्क कक्षा = IV E

बालमन कुछ कहता है

चंदामामा

चंदामामा गोल मटोल
कुछ तो बोल कुछ तो बोल
कल थे आधे आज हो गोल
अब तो खोलो अपनी पोल
रात को ही तुम आते हो
साथ सितारे लाते हो।
दिन में कहाँ छुप जाते हो।
कुछ तो बोल कुछ तो बोल

Sneha
Class – I D
School – Mother's international

बालमन कुछ कहता है

अक्तूबर 2011

बाल मन कुछ कहता है

मेरा बाल मन कहता है कि मैं बड़े होकर डाक्टर बनूँ। डॉक्टर बन कर मैं गरीबों का मुफ्त में इलाज करूँ ताकि पैसे की कमी के कारण उनका इलाज ~~क~~ हो सके। और बीमारी में उनका पैसा बरबाद न हो। उन्हें ~~बीमारी के च~~ गरीबी के चलते बीमारी से तड़पना न पड़े।

Chetna
Class – VII – F
School → K.V. J.N.U. Campus

कैसे

वीरा लायल*

पता नहीं कैसे सूरज, चुपके से आ जाता है?
धीरे-धीरे पूरे जग में उजियारा फैलाता है।
पता नहीं कैसे सागर में लहर हिलोरे खाती है,
पानी की बूँदे बरखा बन जग में जीवन लाती है।
पता नहीं कैसे धीरे से हवा सुहानी बहती है,
''सबको' जीवन देना है'' कानों में यह कहती है।
पता नहीं कैसे चंदा, आसमान में आता है,
गर्मी से आजाद कराके शीतलता दे जाता है।
पता नहीं क्यों, हम बच्चे जल्दी नहीं बड़े होते?
वरना उत्तर पाने को, कक्षा में ही अड़े होते।

*केंद्रीय विद्यालय-2, जे.एल.ए, बरेली, उत्तर प्रदेश।